विषयानुक्रमणिका।

प्रस्तावना।

हर कोई आस्तिक-समाजके लिए प्रभु-भक्ति से बढ़कर और कोई विशेष उपादेय चीज संसारमें नहीं। ईश्वर-भक्तिके अनेक उपायोमें, उनके विविध गुणोंका स्तुति-स्तोत्रों द्वारा स्मरण करना एक मुख्य और अवंध्य उपाय है। यही कारण हैं कि हमारे परम-आस्तिक जैन संप्रदाय के अनेक धुरंधर आचार्योंने विविध भाषाओं में असंख्य स्तुति-स्तोत्रोंकी रचना कर स्वयं भगवद्-भक्तिका अपूर्व लाभ प्राप्त कर अन्य जीवोंके लिए भी उसका रास्ता सरल कर दिया है। अब आवश्यकता है केवल उन उत्तम २ स्तुति-स्तोत्रों को और उसे ठीक २ समझनेके लिए अन्यान्य साहित्यके ग्रन्थों को भी प्रकाशित करनेकी, जिससे सर्व कोई सुगमतासे उसका लाभ ऊठा सकें।

बड़े आनंद की बात है कि हमारे परम पूज्य, प्रातः-स्मरणीय, बृहत्खरतर-गच्छाचार्य, व्याख्यान-वाचस्पति,

जंगम युगप्रधान भट्टारक श्री १००८ श्री जिन-चारित्र सूरी-श्वरजी महाराज ने अन्य व्यर्थ आडंबरों में जोरशोरसे बहते हुए जैन-समाज के समय और धन-व्यय के प्रवाह को रोक-कर, उसे साहित्यप्रकाशन के एकांत-पुण्यानुबंधि कार्य में लगानेका निश्चय ही नहीं, बल्कि तदनुसार प्रयत्न भी शुरु कर दिया है, जिसके फल-स्वरूप "श्री अभयदेवसूरि-ग्रन्थ-माला" नामक एक ग्रन्थसीरीज़ भी गत-वर्ष में प्रारंभ कर दी गई है, जिसमें अब तक विविध-विषयकी चार पुस्तकें भी निकल चुकी हैं और कई एक प्रेसमें छप भी रही हैं।

यहां पर मैं श्रीयुक्त कोठारी रावतमलजी भेरूदानजी हाकिमको जो कि धनीश होनेपर भी नम्र, साहित्य-प्रेमी, उदार-प्रकृति, सरल एवं दृढ़ धर्म-रुचि होनेसे जैन-संप्रदाय के एक भूषण-रूप हैं, अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने उक्त श्रीजी महाराजके इस शुभ प्रयत्न में सर्व प्रथम योग-दान किया है। आपने उक्त ग्रन्थमाला के प्रथम गुच्छकका सर्व-व्यय देकर उसको अमूल्य वितरण किया

है; इतना ही नहीं, उस ग्रन्थकी प्रथमावृत्ति अल्प-समय में ही वितीर्ण हो जानेसे इस दूसरी आवृत्तिका की सर्व-व्यय उसी उत्साह से देकर अपनी स्वाभाविक उदारता और धर्म-प्रेमका खासा परिचय दिया है। मैं समझता हूं, हमारे और भी धनी जैन-भाई यदि ऐसे ही उत्साह से जैन-साहित्योद्धारमें रस लेते हुए अपनी उदारताका प्रवाह इस दिशा में वहावें, तो जैन-साहित्यकी वहुत कुछ उन्नति होनेमें विशेष समय न लगेगा। आशा है अन्य जैनी भाई भी ऐसे कार्यों में यथाशक्ति सहायता कर पुण्य और यश के भागी होंगे, ताकि इस ग्रन्थमाला के व्यवस्थापक-गण और भी विशेष रूपसे जैन-साहित्य को प्रकाशित करने में समर्थ होंगे।

मुझे यह कहते वड़ी खुशी होती है कि हमारे जैन-समाज में भी अब साहित्यकी तरफ विशेष रुचि होने लगी है। थोड़े ही समयमें यह 'नित्यस्मरण-पाठमाला' के प्रथम संस्करण की कापियां खतम होना ही इस बात का ज्वलंत

दृष्टान्त है। इस दूसरे संस्करण में शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है और संस्कृत-प्राकृत भाषाके अनभिज्ञ पाठकोंको भी शुद्ध उच्चारण करनेमें सुगमता हो इस हेतुसे पद-च्छेदादि भी यथास्थान किया गया है। इस आवृत्तिमें "श्रीगौतमस्वामिजीका रास" भी जोड़ दिया गया है, जो कि प्रथमावृत्ति में नहीं था।

संशोधन-कार्य में विशेष ध्यान देने पर भी मेरे दृष्टि-दोष से या प्रेस के भूतोंके कारण संभव है कोई भूलें रह गई हों, पाठक-गण से नम्र प्रार्थना है कि वे उसे सुधार कर पढ़नेका अनुग्रह करें।

विनीत—

संशोधक।



हाकम कोठारी श्रीयुक्त भेरुदान जी
बीकानेर निवासी
वर्त्तमान कलकत्ता

॥ श्री नित्यस्मरण-पाठमाला ॥



॥ अथ नवकार-मन्त्र ॥

णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्व-साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच-णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व-पाव-प्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यन्ते ॥

(१)

॥ प्रथमं श्रीबृहदजितशान्तिस्मरणम् ॥

॥ अजिअं जिअ-सव्व-भयं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-

पावं । जय-गुरु-संति-गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ॥ ववगय-मंगुल-भावे, ते हं विउल-तव-निम्मल-सहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) ॥ सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं । सया अजिय-संतीणं, नमो अजिअ-संतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) ॥ अजिय ! जिण ! सुह-प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (मागहिया) ॥ किरिआ-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति-महा-मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) । पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जह ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ॥ अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरणं, सुर-असुर गरुल-भुअगवइ-पयय-पणिवइअं । अजिअमह-

मवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज्ज-महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं) ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहि-निहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥८॥ (सोवाणयं) सावत्थि-पुव्व-पत्थिवं च वर-हत्थि-मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-संथिअं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलायमाण-वर-गंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं। हत्थि-हत्थ-बाहु-धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं, पवर-लक्खणोवचिअ-सोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज-वर-देव-दुन्दुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ९ ॥ (वेढओ) ॥ अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) ॥ कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि-पुर-वर-सहस्स-वर-णगर-णिगम-जणवय-वई, बत्तीसा-रायवर-सह-

स्साणुयाय-मग्गो, चउद्दस-वर-रयण-नव-महानिहि-चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुन्दर-वई, चुलसी-हय-गय-रह-सय-सहस्स-सामी, छन्नवइ-गाम-कोडि-सामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ (वेढओ) ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्व-भया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासानंदिययं) ॥ इक्खागु-विदेह-नरीसर ! नर-वसहा ! मुणि-वसहा !, नव-सारय-ससि-सकलाणण ! विगय-तमा ! विहुअ-रया !। अजिउत्तम-तेअ-गुणेहिं महा-मुणि-अमिय-बला ! विउल-कुला !, पणमामि ते भव-भय-मूरण ! जग-सरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) ॥ देव-दाणविन्द-चन्द-सूर-वन्द ! हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम,-लट्ठ-रूव ! धंत-रुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल,—दंति-पंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर !, दित्त-तेअ-वंद-धेअ ! सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभाव-णेय ! पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ)॥ विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं। तियसवइ-गणाइरेअ-रूवं, धरणिधर-

पवराइरेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) ॥ सत्ते य सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तव-संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥१६॥ (भुअगपरिरंगियं)॥ सोम-गुणहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी। रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥१७॥ (खिज्जिअयं)॥ तित्थ-वर-पवत्तयं तम-रय-रहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअ-कलि-कलुसं। संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) ॥ विणओ-णय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबु-हाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं वहुसो। अइरु-ग्गाय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगण-विअरण-समुइय-चारण-वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किस-लयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवन्दिअं, किन्नरोरग-णमंसिअं। देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं। अजिअं अजिअं,

पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जु विलसिअं) ॥ आगया वर-विमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं। ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहन्त-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वेढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-विउत्ता भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा। उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीस-पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ स-भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि-महंपि पंजली, राग-दोष-भय-मोह-वज्जिअं। देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तम-महातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंबरंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस-वहू-गामिणिआहिं। पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरं-

तर-थण-भर-विणमिअ-गाय-लयाहिं, मणि-कञ्चण-पसि-ढिल-मेहल-सोहिअ-सोणि-तडाहिं। वर-खिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहिं, रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर-दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ ॥ (चित्राक्खरा) ॥ देव-सुन्दरीहिं पाय-वन्दिआहिं, वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डण-पगारएहिं केहिं केहि वि अवंग-तिलय-पत्त-लेह-नामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुन्ति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ-मोहं। धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पण-मामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गण-देव-गणेहिं, तो देव-वहूहिं पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडिअआहिं। देव-वरच्छरसा-वहुआहिं, सुर-वर-रइ-गुण-पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) ॥ वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउ-क्खराभिराम-सद्द-मीसए कए अ, सुइ-समाणणे अ सुद्ध-

सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय-मेहला-कलाव-नेउरा-भिराम-सद्द-मीसए कए य देव-नट्टिआहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, नच्चिऊण अंग-हारएहिं वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्व-सत्त-सन्ति-कारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नारायओ) ॥ छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडि-आ, झय-वर-मगर-तुरग-सिरिवच्छ-सुलंछणा । दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं)॥ सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया। संथुआ अजिय-सन्ति-पायया, होंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं-तव-बल-विउलं,थुअं मए अजिअ-संति-जिण--जुअलं । ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्प-

सायं, मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसाइवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा) ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, *संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिवि, उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय-सन्ति-थयं । न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासन्ति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलु-कुद्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्रीवृहदजितशान्तिस्तवनं प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

---

* "संवच्छर राईए अ दिअहे अ" इति पाठान्तरम् ।

(२)

॥ अथ द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ॥

उल्लासि-क्कम-नक्ख-निग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं। कुन्दिन्दुज्जल-दन्त-कन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु क्केरे दावि दुइज्ज-सोलस-जिणे थोसामि खेमङ्करे॥१॥ चरम-जलहि-नीरं जो मि-णिज्जञ्जलीहिं, खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए। सयल-नहयलं वा लङ्घए जो पएहिं, अजियमहव सन्तिं सो समत्थो थुणेउं॥ २॥ तहवि हु बहु-माणूल्लास-भत्ति-ब्भरेण, गुण-कणमिव कित्तेहामि चिन्तामणि व्व। अलमहव अचिन्ता-णन्त-सामत्थओ सिं फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३॥ सयल-जय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ट-थट्ठं। नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविन्दे, सययमजिअ-सन्ती ते जिणन्देभिवन्दे ॥४॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए

सुप्पवित्ती । फुरइ परम-तित्ती होइ संसार-छित्ती, जिण-जुअ-पय-भत्ती हीअ-चिंतोरु-सत्ती ॥५॥ ललिअ-पय-पयारं भूरि-दिव्वंग-हारं, फुड-घण-रस-भावोदार-सिंगार-सारं । अणिमिस-रमणिज्जं दंसण-च्छेअ-भीया, इव पुण मणि-बंधाकास-नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअ-संती ते कया-सेस-संती, कणय-रय-पसंगा छज्जए जाणि मुत्ती । सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-थण-घुसिणिक्कुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविह-नय-भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं । इय कुनय-विरुद्धं सुप्प-सिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥८॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंधयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं । फुरइ फुड-फलंताणंत-णाणंसु-पूरो, पयड-मजिअ-संति-ज्झाण-सूरो न जाव ॥ ९॥ अरि-करि-हरि-तिण्हु-ण्हंबु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारी रुद्द-खुद्दोवसग्गा । पल-यमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निबिडतर-तमोहा भक्ख-रालुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ-दुरिअ-दारु-दित्त-झाणग्गि-

जाला-परिगयमिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं। कणय-निहस-रेहा-कंति-चोरं करिज्जा, चिर-थिरमिह लच्छिं गाढ-संथंभिअव्व ॥११॥ अडवि-निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं। जलिअ-जलण-जाला-लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहाजिआण ॥१२॥ हरि-करि-परिकिण्णं पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि-रज्जं छड्डिअं आण-सज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति-मग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहिं, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं। ललिअ-भुअ-लयाहिं पीण-सोणि-त्थलाहिं, सम-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस-किडिभ-कुट्ठ-ग्गंठि-कासाइसारा, खय-जर-वण-लूआ-सास-सोसोदराणि। नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कन्नाइ-रोगे, मह जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग-थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं। पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह

मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअ-सत्तु-पुत्त! सिरि-अजिअ-जिणेसर!, तह अइरा-विस-सेण-तणय! पंचम-चक्कीसर! । तित्थंकर! सोलसम! संति! जिण-वल्लह-संथुअ!, कुरु मंगलमवहरसु दुरियम-खिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥२॥

(३)

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडामणि-किरण-रंजिअं मुणिणो। चलण-जुअलं महाभय,-पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण-नह-मुह,-निवुड्ड-नासा विवन्न-लायण्णा। कुट्ठ-महा-रोगानल,-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा॥२॥ ते तुह चलणा-राहण,-सलिलंजलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया। वण-दव-दड्ढा गिरि-पाययव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय-जलंनिहि,-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे। सं-

भंत-भय-विसंठुल,-निज्जामयं-मुक्क-वावारे ॥४॥ अविदलिय--जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पासे-जिण-चलण-जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥ खर-पवणुद्धुय-वण-दव,-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे। डज्झंत-मुद्ध-मिय-वहु,-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥ जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहुअणाभोअं। जे संभरंति मणुअ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग-भीसण,-फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं। उग्ग-भुअंगं नव-जलय,-सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीड-सरिसं, दूर-परिच्छूढ-विसम-विस-वेगा। तुह नाम-क्खर-फुड-सिद्ध,-मंत-गुरुआ नरा लोए ॥ ६ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर,-पुलिंद-सद्दूल-सद्द-भीमासु। भय-विहुर-वुन्न-कायर,-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्त-विहव-सारा, तुह नाह! पणाम-मत्त-वावारा। ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआ-नल-नयणं, दूर-विआरिय-मुहं महाकायं। नह-कुलिस-घाय-

विअलिअ,-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय-ससंभम-
पत्थिव,-नह-मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स। तुह-वयण-
पहरणंधरा, सीहं कुद्ध'पि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि-धवल-
दंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंग-
नयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं
महा-गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति। जे तुम्ह चलण-
जुअलं मुणिवइ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख-
खग्गा,-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्न-
करि-कलह-मुक्क सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय-दप्पुद्धर-
रिउ,—नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं। पावंति पाव-
पसमिण! पास-जिण! तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग-जल-
जलण-विसहर-चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं। पास-जिण-
नाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा-
भयहरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं। भविय-जणा-
णंदयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥ १९ ॥ राय-भय-जक्ख-
रक्खस,—कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु। संझासु

दोसु ंधे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पवां पसमेउ; सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥ २१ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ॥

(४)

अथ गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम् ॥

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुह-जणयं ॥ १ ॥ नासिय-सयल-किलेसा, निहय-कुलेसा पसत्थ-सुह-लेसा । सिरि-वद्धमाण-तित्थस्स मङ्गलं दिन्तु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढ-कम्म-बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा ति-जय-पसिद्धा, हणन्तु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता, पंच-पयारं सया पयासन्ता । आयरिआ तह तित्थं, निहय-कुतित्थं पयासन्तु ॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सि-अवाय-वायगा वाए । पवयण-पडणीय-कए ऽवणिंतु सव्वस्सं ।

सङ्घस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहणुज्जुय-साहूणं जणिय-सव्व-साहज्जा। तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ। तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ निच्छउमो सुअ-धम्मो, समग्ग-भव्वंगि-वग्ग-कय-सम्मो। गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स. मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त-धम्मो, संपाविअ-भव्व-सत्त-सिव-सम्मो। नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स ॥ ६ ॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स। सिरि-वद्धमाण-पहु-पयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायङ्ग-गयमुह-पमुक्खा। सिरि-बम्भसन्ति-सहिआ, कय-नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहय-डिम्बा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि-वइरुट्टा, सन्ति-सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२॥ सोलस विज्जा-देवीउ, दिन्तु सङ्घस्स मङ्गलं विउलं। अच्छुत्ता-सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिण-सासण-कय-रक्खा,

जक्खा चउवीस-सासण-सुरावि । सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासन्तु ॥ १४ ॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्चकराविअ अ, तित्थस्स हवन्तु सन्तिकरा ॥ १५ ॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय-साहज्जो । गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥१६॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ । जिण-सासण-ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७॥ दस-दिसिपाला स-क्खित्तपालया नव ग्गहा स-नक्खत्ता । जोइणि-राहु-ग्गह-काल-पास-कुलिअद्ध-पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकाल-कंटएहिं सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स सङ्घस्स ॥ १९ ॥ भवणवई वाणमन्तर,-जोइस-वेमाणिआ य जे देवा । धरणिन्द-सक्क-सहिआ, दलन्तु दुरियाइ तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिय-तमोहं । तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासणं जए

जयइ । सिद्धि-पह-सासणं कुपह-नासणं सव्व-भय-महणं
॥ २२ ॥ सिरि-उसभसेण-पमुहा, हय-भय-निवहा दिसन्तु
तित्थस्स । सव्व-जिणाण गणहारिणोऽणहं वञ्छियं सव्वं
॥ २३ ॥ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थं समप्पियं
जस्स । सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहंस यल-संघस्स
॥२४॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसन्तुसयल-संघस्स ।
इयर-सुरा वि हु सम्मं जिण-गणहर-कहिय-कारिस्स ॥२५॥
इय जो पढ़इ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए ।
जिणदत्ताणाए ठिओ, सनिट्ठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥

इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणम् ॥ ४ ॥

(५)

॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥

मय-रहियं गुण-गण-रयण, सायरं सायर पणमिऊण ।
सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्म-
हिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा । पणयंगि-वग्ग-

दाविअ-सुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा, समत्त-पर-तित्थ-जणिय-संखोहा। पडिभग्ग-मोह-जोहा, दंसिअ-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुह-दाहा सिवंब-तरु-साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण-जण-जणिय-चुज्जा सज्जो निरवज्ज-गहिय-पव्वज्जा। सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गिरि-गुरु-चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिअ-महा। ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी। सिरि-नेमिचन्द-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरू ॥७॥ सिरि-वद्धमाण-सूरी, पयडीकय-सूरि-मंत-माहप्पो। पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससङ्कुव्व सुह-जणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि। जुगपवर-सुद्ध-सिद्धन्त-जाणओ पणय-सुगुण-जणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह-महिव,—ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं। मुक्का विआ रिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि-गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि-विप्फुरन्त-सच्छन्द-सूरि-

मय-तिमिरं। सूरेणव सूरि-जिणे,-सरेण हय-महिअ-दोसेणं ॥११॥ सुकइत्त-पत्त-कित्ती, पयडिअ-गुत्ती पसन्त-सुह-मुत्ती पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंद-जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,—रयणुक्कोसो पणासिअ-पओसो। भव-भीय-भविअ-जण-मण,-कय-संतोसो विगय-दोसो॥१३॥ जुग-पवरागम-सार,—प्परूवणा-करण-बन्धुरो धणिअं। सिरि-अभयदेव-सूरी, मुणि-पवरो परम-पसम-धरो ॥ १४ ॥ कय-सावय-संतोसो, हरिव्व सारंग-भग्ग-संदेहो। गय-समय-दप्प-दलणो, आसाइय-पवर-कव्व-रसो ॥१५॥ भीम-भव-काणणम्मि अ, दंसिअ-गुरु-वयण-रयण-सन्दोहो। नीसेस-सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणुओग-प्पहाण-सच्चरणो। असम-मयराय-महणो, उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ-निम्मल-निच्चल,-दन्त-गणोगणिअ-सावओत्थ-भओ। गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व, सूरी जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग-पवरागम-पीऊस-पाण-पीणिय-मणा कया भव्वा।

जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १६ ॥ विप्फु-
रिय-पवर-पवयण,-सिरोमणी वूढ-दुव्वह-खमो य। जो
सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण-
महीणं, सुगुरूणं पारतन्तमुव्वहइ। जयइ जिणदत्त-सूरी,
सिरि-निलओ पणय-मुणि-तिलओ ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरूपारतन्त्रयनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥ ५ ॥

(६)

॥ अथ षष्ठं स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणुगामि-संघस्स।
सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥
गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा।
सिरि-वद्धमाण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणन्तु सया ॥ २ ॥
सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति। अवह-
रिय-विग्घ-संघा, हवन्तु ते संघ-सन्तिकरा ॥ ३ ॥ सिरि-
थंभणय-ट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीण। नि-

इल्लिय-दुरिय-विंदो,धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥४॥ गोमुह-
पमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते ।
कय-सग्गुण-संघ-रक्खा, हवन्तु संपत्त-सिव-सुक्खा ॥५॥
अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया वि जिण-पणया।
सिद्धाइया-समेया, हवन्तु संघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्काए-
सा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण-भत्तो । सिरि-बम्भ-
सन्ति-जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्त-गिह-गुत्त-
सन्ताण-देस-देवाहिदेवया ताओ । निव्वुइ-पुर-पहिआणं,
भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि-चक्कधरा, विहि-
पहरिउच्छिण्ण-कन्धरा धणियं। सिव-सरण-लग्ग-सङ्घस्स,
सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो
सङ्घओ सुसंघेण । जिणचन्दोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लह-
पहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो
व्व हय-तिमिरो । जिणचंदा-ऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे
अ ॥११॥ गुरु-जिणवल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे ।
जिणचन्द-जिणेसर-वद्धमाण-तित्थस्स वुड्ढि-कए ॥ १२ ॥

जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नन्ति कुणन्ति जे य कारंति। मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥ १३ ॥ जिणदत्त-गुणे नाणाइणो सया जे धरन्ति धारन्ति। दंसिअ-सिअवाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

(७)

॥ अथ उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्प-पायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ इअ संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर-

निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिण-चंद! ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि।

(१)

अथ श्रीभक्तामर-स्तोत्रम्।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,-मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्। सम्यक् प्रणम्य जिन! पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-

त्रपोऽहम्। बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-विम्ब,
—मन्य: क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्? ॥ ३ ॥ वक्तु
गुणान् गुण-समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-
प्रतिमोऽपि बुद्ध्या? । कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्? ॥ ४ ॥ सोऽहं
तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि
प्रवृत्तः। प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति
किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं
श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-
निकरैक-हेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-संनिबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रान्त-
लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्ध-
कारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद,--मारभ्यते
तनु-धियापि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां
नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति ? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति दुग्ध-सिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत ! । तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेष-निर्ज्जित-जगत्-त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान्

निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् । कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम-वर्त्तिरपवर्जित-तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः?॥१६॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-

हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर ! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं

नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !, तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! । दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख, -माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुङ्गो-दयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार,-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त, -मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु--कर-प्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्

॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति,--पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त,--मुक्ताफल-प्रकर भूषित-भुमि-भागः । बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं, दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शङ्क,--स्त्वन्नाम-नाग-दमनी

हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वलात्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ वलं वलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,—वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जय-जेय-पक्षा,-स्त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र,—पाठीन-पीठ-भ-दोल्वण-वाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग--शिखर-स्थित-यानपात्रा,-स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः । त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः ॥४१॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त--द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,—संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(२)

॥ अथ वृद्धशान्तिः ॥

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्तिभाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि-प्रभावा,-दारोग्य-श्री-धृति-मतिकरी क्लेश-विध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवानां, समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहित-जन्माभिषेकः शान्ति-

मुद्‌घोषयति, ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा, 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्य-जनैः सह समागत्य, स्नात्र-पीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्‌घोषयामि। तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः। त्रैलोक्य-नाथाः, त्रैलोक्य-महिताः, त्रैलोक्य-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्‌द्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानि १, निर्वाणि २, सागर ३, महायशः ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजः १० स्वामि ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति, १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्घ १९ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४ एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थंकराः ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४ सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५,

शान्ति १६, कुन्थु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २० नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४ एते वर्तमान-जिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्ति १० सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४ निर्मम १५, चित्रगुप्त १६ समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९; विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य्य २३, भद्रंकर २४, एते भावि-तीर्थकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु। ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥ ॐ श्री नाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ९, दृढ़रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ इति वर्त्तमानचतुर्विंशति-जिन-जनकाः ॥

ॐ श्री मरुदेवो १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नन्दा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान-जिन, जनन्यः॥

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातङ्ग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४ इति वर्त्तमान-जिन-यक्षाः॥

ॐ चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ काली ४ महाकाली ५ श्यामा ६, शान्ता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चण्डा १२ विदिता १३ अङ्कुशा १४ कन्दर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया

निब्भरेण हिअएण । ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिण-चंद! ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि ।

(१)

अथ श्रीभक्तामर-स्तोत्रम् ।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,-मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन! पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-

त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,
--मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तु
गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-
प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥ ४ ॥ सोऽहं
तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश !, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि
प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति
किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं
श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-
निकरैक-हेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-संनिबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्त-
लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्ध-
कारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेदं,--मारभ्यते
तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां
नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।। दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ६ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति ? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति दुग्ध-सिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत !। तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान्

निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् । कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम-वर्त्तिरपवर्जित-तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ?॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-

हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं

नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !, तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! । दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद्-पीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख, -माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुङ्गो-दयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार,-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त, -मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।

॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति,--पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ। पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य। यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्। ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त,--मुक्ताफल-प्रकर भूषित-भुमि-भागः। बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं, दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्। विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्। आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शङ्क,--स्त्वन्नाम-नाग-दमनी

हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,—वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जय-जेय-पक्षा,-स्त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र,—पाठीन-पीठ-भ-दोल्वण-वाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग--शिखर-स्थित-यानपात्रा,-स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः । त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः ॥४१॥ आपाद-कण्ठमुरु-श्रृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं वृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त--द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,—संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(२)

॥ अथ बृद्धशान्तिः ॥

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्तिभाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि-प्रभावा,-दारोग्य-श्री-धृति-मतिकरी क्लेश-विध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवानां, समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहित-जन्माभिषेकः शान्ति-

मुद्घोषयति, ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा, 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्य-जनैः सह समागत्य, स्नात्र-पीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि। तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहा॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः। त्रैलोक्य-नाथाः, त्रैलोक्य-महिताः, त्रैलोक्य-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्द्योतकराः॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानि १, निर्वाणि २, सागर ३, महायशः ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजः १० स्वामि ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति, १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्घ १९ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४ एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थकराः॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४ सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५,

शान्ति १६, कुन्थु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २० नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४ एते वर्तमान-जिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्ति १० सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४ निर्मम १५, चित्रगुप्त १६ समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९; विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य्य २३, भद्रंकर २४, एते भावि-तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु । ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥ ॐ श्री नाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ९, दृढ़रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ इति वर्त्तमानचतुर्विंशति-जिन-जनकाः ॥

ॐ श्री मरुदेवी १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नन्दा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान-जिन, जनन्यः॥

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातङ्ग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४ इति वर्त्तमान-जिन-यक्षाः॥

ॐ चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ काली ४ महाकाली ५ श्यामा ६, शान्ता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चण्डा १२ विदिता १३ अङ्कुशा १४ कन्दर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया

१६, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४ इति वर्त्तमान--चतुर्विंशति--तीर्थंकर-शासनदेव्यः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति-कीर्त्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः । ॐ रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रश्रृङ्खला ३ वज्राङ्कुशा ४ चक्रेश्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ९ गान्धारी १० सर्वास्त्रमहाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ एताः षोडश विद्या-देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतु-सहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायका ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-संबन्धि-बन्धु-वर्ग-सहिता नित्यं

चामोद-प्रमोद-कारिणो भवन्तु। अस्मिंश्च भूमण्डले आयतन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-माङ्गल्योत्सवा भवन्तु। सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥१॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः। शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे॥ २॥ ॐ उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि। संपादित-हित-संपद्, नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघ-पौर-जन-पद,-राजाधिप-राज-संनिवेशानाम्। गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहरणेर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौर-लोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज-संनिवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा २ ॐ ह्रीँ श्रीँ पार्श्वनाथाय

स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरागुरु-धूप-वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्प-वस्त्र-चन्दनाभरणालंकृतः, चन्दनतिलकं विधाय कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं मस्तके दातव्यमिति। नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयर-माया, सिवादेवी तुम्ह-नयर-निवासिनी। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥२॥ शिवमस्तु सर्व-जगतः, पर-हित-निरता भवन्तु भूत-गणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥

इति बृहच्छान्तिः समाप्ता ॥

(३)

अथ जिनपञ्जर-स्तोत्रम्।

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्व-पाप-क्षयंकरः। मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः। कमलप्रभ-सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम्। मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोध-लोभ-विवर्जितः। देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेद्द मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं

मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च। सूर्य-चन्द्र-निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ-सिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदन-द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिनः। अङ्ग-संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥८॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः। दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः। उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः। रोहिणी-प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने। संभवः कर्ण-युगलं, नासिकां चाभिनन्दनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः। जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो विभुः ॥१३॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं च श्रीशीतलः। श्रेयांसो बाहु-युगलं, वासुपूज्यः कर-द्वयम् ॥ १४ ॥ अङ्गुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोसौ स्तनावपि। सुधर्मोऽप्युदरा-स्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभि-मण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं

रक्षे,—द्रिरो रोम-कटी-तटम् । मल्लिरूरू पृष्ठ-वंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरण-द्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं,वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथिवी-जल-तेजस्क,—वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेष-पापेभ्यो,-वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रु-संकटे । व्याघ्र-चौराग्नि-सर्पादि-भूत-प्रेत-भयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाल-मरण-प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग-पीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा-ग्रह-गणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुख-सम्पदम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्र,--श्रियं स लभते नरः ।२३। प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत्स कमलप्रभाख्य,-लक्ष्मीं मनो-वाञ्छित-पूरणाय ।। २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-गच्छे, देवप्रभाचार्य-पदाब्ज-

हंसः । वादीन्द्र-चूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमल-प्रभाख्यः ॥२५ ॥

इति श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

(४)

अथ श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षर-संलक्ष्य,--मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वाला-समं नाद-बिन्दु-रेखा-समन्वितम् ॥ १ ॥ अग्नि-ज्वाला-समाक्रान्तं, मनो-मल-विशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः ॐ नमः सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः । ॐनमस्तत्त्व [illegible]ष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥५॥ [illegible]यसेस्तु [illegible]तदर्ह [illegible]-ष्टकं शुभम् । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वि[illegible]

॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत्तु मस्तकम्। तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम्। नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत् पादान्तमष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्व-प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धिपञ्चषान्। सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दु-स्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पञ्चातो ज्ञान-दर्शन—चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ह्राँ। ह्रीँ। ह्रुँ। ह्रूँ। ह्रेँ। ह्रैँ। ह्रौँ। ह्रः। असिआउसाज्ञान-दर्शनचारित्रेभ्यो नमः। जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधि-समावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तर-स्तारस्तारामण्डल-मण्डितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम्। नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य-तोज्झितम्। निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम्। तामसं चिर-

संबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परंपरपरापरम् ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम् ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्म-संबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु । ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोक-प्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः । तुर्य-स्वर-समायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२१॥ नादश्चन्द्र-समाकारो, बिन्दुर्नील-सम-प्रभः । कलारुण-समासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः-संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसार-संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥२३॥ चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नाद-स्थिति-समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि,-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ । शिर-ई-स्थिति-

संलीनौ, पार्श्व-मल्ली जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थंकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः। माया-बीजाक्षर-प्राप्ता,—श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गत-राग-द्वेष-मोहाः, सर्व-पाप-विवर्जिताः। सर्वदाः सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादित-सर्वाङ्गं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥२९॥ देवदे० मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देव० मा मां हिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३॥ देव० मा मां हिनस्तु याकिनी ॥३४॥ देव० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देव० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देव० मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥ ३८॥ देव० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धयः। ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरर्हं सर्व-निधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पाताल-

वासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः। स्ववर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि-लब्धयः। ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जना भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा। ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेव-प्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती। जयाम्बा विजया नित्याक्लिन्ना जिता मद-द्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी। माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये। मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुःप्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः। भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ। श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम्। लक्ष्मी-भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते

भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम्। वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण-मात्रतः ॥ ५२॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत्। तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे। धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्व-भीति-विनाशकम् ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः। वात-पित्त-कफोद्रेकैः-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठ-वर्त्तिन शाश्वता जिनाः। तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्य-चित्। मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बाल-हत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम्। अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने। तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत्। स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम्। पदं प्राप्नोति

शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते। गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परम्। पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥ ६३ ॥ (इति श्रीऋषिमण्डलस्तोत्रं क्षेपकश्लोकान्निराकृत्य मूलमन्त्रकल्पानुसारेण लिखितं गणिभिः श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः, तदेवात्रास्माभिर्मुद्रितम्)

(५)

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जगविख्यात। पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहलपुरे, अहमदावादे पास। गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस॥२॥ सुभ वेला सुभ दिन घडी, मुहुरत एक मंडाण। प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी।

धण कण कंचण मणि माणक दे, गोडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हुंती जी। अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (गु०) ॥ ५॥ जागंतो जक्ष जेहनै कहियै, सुहणो तुरकनैं आपै जी। पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुभो संतापै जी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी। अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लाछि धणी घर जास्यै जी (गु०) ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठीजी। निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥ ६ ॥ (दूहा) ॥ मनसु बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण। बीबी नें सुहणा तणो, संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय। अवस ताव परगट करो, नहीतर मारै सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयै, पहली बांधै पाज।

सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्ष-राज॥ १२ ॥ (ढाल) एम कहीं जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणै जी। पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जो (एम०) ॥ १३ ॥ पांचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी। जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारैजी (एम०) ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जी। पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी (ए०) ॥१५॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो,आपणे थांनक पहुंतो जी। पाटण मांहें सारथवाहु, हींडै तुरकने जोतो जी (ए०) ॥१६॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी। संकेत पहुतो साचो जाणि, बौलावै बहु लाडै जी (ए०) ॥ १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर फेरी जी। पांचसै टका जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०) ॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगै जी। केसर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी (ए०) ॥ १६ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै ज़ी।

अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघ ने सुर साखै जी (ए०) ॥ २० ॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी । ठाम २ ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए०) ॥२१॥ (दूहा) ॥ इक दिन देखै अवधसु ं, परिकर पुरनो भङ्ग । जतन करू ं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥२२॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड । महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहु ंचाड ॥२३॥ कुशल खेम तिहां अछे, तुझनें मुझने जाणि । संका छोडी काम करि, करतो मकरि स ंकाणि ॥ २४ ॥ (ढाल) ॥ पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै । परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥ २५॥ बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चाले तेतलै । गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंड़ावुं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करू ं प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां । चिन्तातुर थयो निद्रा लहै,

यक्षराज आवीने कहैं ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ २६ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनी सरसी कूओ । खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छैं नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै, कोढ पराभवियो किसमिसे । तिहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीने पूरूं आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैंण। गोठी मनह मनोरथ हुवा, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो । घडैं घाट करैं कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्ग मंडप रलियामणों रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मांडे आवास। दिवस विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर

चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पद्मासण बेठा श्रीपास। महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहै-वान ॥३७॥ वात पुराणी मैं सांभली, तवन मांहि सूधी सां-कली। गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करांने परने पछे ॥ ३८ ॥ (दोहा) ॥ विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप। प्रीत करे श्री सङ्घने, देखाडे निज रूप ॥३९॥ गरुओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार। सांनिध करै श्री सङ्घने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार। मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग। पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥४२॥ निरधनको घरि धन नो सुत, आपे अपु-त्रीयाने पुत्र। कायरने सूरापण धरै, पार उतारै लच्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग; पग विहूणाने आपै पग। ठाम नहीं तेहने द्यै ठाम, मनवंछित पूरें अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार। आरतियानी

आरत भंग, धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्तां सहाय दीयै यक्ष राज, तेहना मोटा अछे दिवाज। बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार। बंधन तूटे बेडी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल। हस्त जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार। विषधरनो विष ऊतरे, सांग्रामें जय जय कार ॥ ४६ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय। परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानो चाल) ॥ उंजितु २ उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंते। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं) ॥५१॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तप ते। गर्भबन्धन व्रणं सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा भखंते (उं०)॥५२॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते। दाढ

उंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकरालं दंते ॥५३॥ (उं०) धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लोहुं मिलैं सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंते (उं) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीड़ा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते। वदत वर प्रीतसुं प्रीति-विमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै (उंजितु) ॥ ५५ ॥

॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ श्री गौतम स्वामिजी का रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो; पणमिवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया; जिम निवसे

तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण; मगह देस सेणिय नरेस, रिऊ दल वल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा; विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो; चाउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर; सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय; एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या सिंजिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय; रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो; पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो। करय निरंतर

यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय; अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानि-लो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन वेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसंता; जो-जन वाणि वखाण करंता । जाणिवि वर्द्धमान जिण

पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता। पेक्खवि इन्दभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥१३॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरम-हिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहिं देवइ निस्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो; हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो; दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज, कोसीसे नवघाट तो; वइर

विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर; इंद्र इंद्राणो राय तो; चित्त चमक्किय चिंतवए, सेवंताँ प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो; एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो; श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो, पंच सयांसुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करे, अगनिभूइ आवेय तो; नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो। बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो; जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो;

बोधिबीज संजाय मनें, गोयम भवहि विरत्त; दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो; दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय सरो । समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपजे ए; ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां २ दीजें दीख, तीहां केवल ऊपजे ए; आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय; एणिछल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण; आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय; तापस पन्नर सएण, तो मुनि दीठ आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां संगति न ऊपजे ए; किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए; तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्फन्न, दंडकलस ध्वजवड

सहिय; पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय। निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब; पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्यो पुंडरीक, कंडरिक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२७॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे; गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे; साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पञ्च सयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय; पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम; जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसैं, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ; जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म

करिस खेव; छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥३१॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय; विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघैं सहिय; आवियो ए नयणानंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे; आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समो ए; तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासुं टालियो ए; जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए, चिन्तव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥३४॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतिहि भोले भोलव्यो ए; आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिणसमे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट्ट, रहितो

रागे साहियो ए; केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज ऊमाहियो ए। तिहुअण ए जय-जयकार, केवल महिमा सुर करे ए; गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासे संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ बरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहिरा लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरू वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव घनें। जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो। पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर-

जिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरी ॥४०॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वं छिय काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥४२॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमिति सोभा संभवा ए। देवां धुर अरिहंत नमीजे, * विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पर-घर वसतां काय करीजे, देस देसांतर काय भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे; नव निधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥

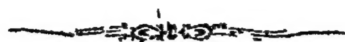
---

* यह श्री विनयप्रभ उपाध्याय जी, श्री जिन कुशल सूरिजी के, जिनका स्वर्गवास वि० सं० १३८६ में हुआ था, शिष्य थे।

चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामी रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए। तिहां बेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतमस्वामि रास सम्पूर्ण।

श्री अभयदेवसूरि-ग्रंथमाला।



तैय्यार पुस्तकें—

नंबर।	पुस्तकका नाम।	मूल्य।
१	नित्यस्मरण-पाठमाला (द्वितीयावृत्ति)	अमूल्य
२	शुद्ध देव अनुभव विचार (हिन्दी)	,,
३	द्रव्यानुभव-रत्नाकर ,,	२॥)
४	जिन दर्शन-पूजन-सामायिक विधि प्रकाश	।≈)

छपती हैं—

१ राइय-देवसिय-प्रतिक्रमण सूत्र

२ अध्यात्म-अनुभव-योग-प्रकाश (हिन्दी)।

३ आगम सार का हिन्दी भाषान्तर।

४ सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण-सूत्र।

छपेंगी—

१ खरतरगच्छ पंच प्रतिक्रमण सूत्र (अर्थ-सहित)

२ प्राचीन-स्तोत्र-रत्नमाला (इसमें प्राचीन विख्यात आचार्योंके बनाये हुए कई अद्भुत स्तोत्र-रत्नों का समावेश है)

अन्य पुस्तकें—

१ स्याद्वादानुभव-रत्नाकर । १॥)

२ पर्युषणा-निर्णय । अमूल्य

मिलनेका पता—

१—श्रीमद्-अभयदेवसूरि-ग्रन्थमाला,

बड़ा उपाश्रय, बीकानेर (राजपूताना)

२—बाबू भैरुदानजी अमीचन्दजी.

नं. ३, मल्लिक स्ट्रीट, कलकत्ता ।

३—आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल ।

रोशन मोहोल्ला, आगरा ।

यह पुस्तक सहायक महाशय के "नं. २, हमाम गली, कलकत्ता" इस पतेसे भी मिल सकती है ।